21 मई, 2023 गोरखपुर ।

श्री गोरखनाथ मंदिर,गोरखपुर में नवनिर्मित मन्दिरों में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर आयोजित सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा ज्ञान-यज्ञ के सातवें व विराम दिवस के अवसर कथा व्यास डॉ॰ श्यामसुन्दर पाराशर जी ने कहा कि समाज में साक्षरता के साथ सरसता की ही परम आवश्यकता है, क्योंकि साक्षर व्यक्ति यदि सरस नहीं है तो वह विपरीत आचरण करने लगता है और साक्षर से राक्षस का रूप धर लेता है इसलिए शिक्षा से व्यक्ति शिक्षित या साक्षर हो सकता है किंतु सरस बनने के लिए उसे साथ में भगवान के कथामृत का श्रवण करना भी परम आवश्यक होता है। इसके द्वारा व्यक्ति के अंदर भक्ति का जो भाव जगता है उससे वह संसार के प्रत्येक प्राणी में भगवत् दर्शन करते हुए सभी से प्रेम करने लगता है ऐसी स्थिति में वह कभी भी दूराचरण नहीं करता है।

कथा व्यास ने उद्धव प्रसंग सुनाते हुए कहा कि उद्धव परम विद्वान् थे किंतु उनके अंदर सरसता का अभाव था इसलिए भगवान उनको गोपियों के पास वृंदावन भेजते हैं और गोपियों के द्वारा उनको भक्ति के रस से सरस करवाते हैं।

उन्होंने कहा कि आज जो भी दुनिया में आतंक फैलाने का कार्य कर रहे हैं वह सभी अशिक्षित नहीं अपितु पढ़े लिखे साक्षर हैं किंतु उनके अंदर सरसता नहीं है,उनके हृदय में भगवान की भक्ति नहीं है इसलिए वह पढ़े-लिखे आतंकवादी बन जाते हैं।

कथा व्यास ने भगवान श्री कृष्ण के सांदीपनि आश्रम में निवास कर विद्या अध्ययन का वर्णन सुनाते हुए कहा कि उत्तम शिक्षा गुरु की सेवा से ही प्राप्त होती है वह भी गुरु के आश्रम में निवास करते हुए उनकी सेवा करें तो उत्तम व श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त होता है । आज समाज में विपरीत परिस्थिति है कि गुरु ही छात्रों के घर आकर शिक्षा देता है, जहां सेवा की भावना भी नहीं होती है। इसलिए आज छात्रों में उत्तम विद्या का अभाव होता है।

कथा व्यास ने जरासंध और कालयवन की कथा सुनाते हुए कहा कि हमारा यह मानव जीवन हीं मथुरा नगरी है हमारे जीवन का ज्यों हीं 50 वां अध्याय प्रारंभ होता है तभी जरासंध का आक्रमण होने लगता है जरा अर्थात बुढापा। हम योगासन प्राणायाम और च्यवनप्राश खा कर के उस जरासंध से लड़ते हैं किंतु अंत में जब कालयवन का हमला होता है तो हमें यह मथुरा नगरी रूपी शरीर छोड़ कर फिर किसी दूसरे नगर को जाकर बसाना पड़ता है। भगवान भी 17 बार जरासंध के आक्रमण में उसको पराजित करते हैं किंतु 18वीं बार जब जरासंध और उसके साथ कालयवन का हमला होता है तो मथुरा नगरी छोड़कर रणछोड़ बनते हैं और जाकर के नई द्वारिकापुरी बसाते हैं।

कथा व्यास ने सुदामा चरित सुनाते हुए कहा कि भगवान परम दीनबंधु है, जिस दरिद्र को दुनिया हेय दृष्टि से देखती है वैसे दरिद्र सुदामा के चरणों को भगवान अपने नेत्र जल से धोते हैं और उनके चरणों के जल को अपने सिर पर लगाते हैं और रुक्मणी से कह कर अपने पूरे घर को उस जल से पवित्र कराते हैं। भगवान को दरिद्र भक्त सबसे प्रिय है सुदामा ब्रह्म ज्ञानियों में श्रेष्ठ और भगवान के प्रिय सखा तो थे हीं साथ में दरिद्र भक्त थे इसलिए सुदामा की एक मुट्ठी चावल खाकर उनको एक लोक का सब वैभव भगवान देते हैं।

भवरोग की दवा संसार के चरणों की उपासना है। कथा व्यास ने कहा कि हम सभी जीव भवरोगी हैं इस संसार रूपी रोग की दवा भगवान के चरणों की नित्य उपासना है। इस दवा का कोई रिएक्शन भी नहीं है जब आप में पूरी तरह से भय समाप्त होकर सभी जीवो में भगवान का स्वरूप दिखने लगे तब समझो कि आप भाव रोग से मुक्त हो गए हो।

उन्होंने कहा कि जीवन में सद्गुरु एक होना चाहिए पर शिक्षा जहां से मिले वहां से ले लेना चाहिए।

कथा व्यास ने आज की कथा में भगवान की रुक्मिणी आदि १६१०८ रानियों से विवाह का वर्णन, जरासंध व कालयवन वध, शिशुपाल वध, सुदामा चरित, भागवत धर्म का वर्णन किया साथ हीं " मैने मेंहदी रचाई रे कृष्ण नाम की" आदि गीत गाकर श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

कथा समापन में अपने उद्बोधन में गोरक्षपीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज माननीय मुख्यमंत्री ने कहा कि मंदिरों में देवी देवताओं की प्राण प्रतिष्ठा समाज के सभी लोगों के हित से जुड़ी हुई है ।आप सभी मंदिरों में स्थित मूर्तियों की यदि दूर से पूजा करें और स्वच्छता के प्रति आग्रही बनें तो भगवान की कृपा आप सभी पर होगी। उन्होंने जयपुर राजस्थान के मूर्ति कलाकार मुकेश कुमार जैमिनी व उनके पुत्र को सम्मानित किया साथ ही आर्किटेक्ट इंजीनियर अनुपम अग्रवाल अंगवस्त्र और स्मृति चिन्ह से सम्मानित किया।

मंच पर अलवर राजस्थान से पधारे सांसद व महंत बालक नाथ ने कहा कि कथा का कभी विराम नहीं होता, अपितु इस कथा का प्रसाद हमें प्राप्त हुआ है हम इस प्रसाद को अपने गांव समाज में जाकर वितरित करेंगे। इन आयोजनों के माध्यम से भगवान की कथा जन जन तक पहुंच रही है और आज देश में जो वातावरण बना है यह बना रहे हमारे धर्म का यश पूरे संसार को प्राप्त हो, इसके लिए हम सब को आगे आना होगा। यह केवल संत जन का हीं दायित्व नहीं है।

इसके पूर्व नव निर्मित मंदिर में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा गोरक्षपीठाधीश्वर पूज्य योगी आदित्यनाथ जी महाराज ने मूर्तियों का अंग न्यास तथा पूजन कर किया ।

कथा में अयोध्या धाम से पधारे जगद्गुरु वासुदेवाचार्य जी ने कहा कि भागवत धर्म ऐसा धर्म है जिस के मार्ग पर पट्टी बांधकर भी दौड़ने वाले व्यक्ति की कभी गिरने की संभावना नहीं रहती है। यह भागवत कथा भागवत धर्म की प्रतिष्ठा करता है और यहां नवग्रह आदि देवताओं की प्रतिष्ठा भी भागवत धर्म की ही प्रतिष्ठा है। आज हमें जिनके कारण यह सौभाग्य प्राप्त हुआ है ऐसे गोरक्ष पीठाधीश्वर को धन्यवाद देंगे जिनके कारण आज ब्रिटेन भी अपनी नीतियां बदलने को मजबूर हुआ है।

अयोध्या धाम से पधारे जगतगुरु श्री धराचार्य जी ने कहा कि हमें वेदों का तात्पर्य समझने के लिए इतिहास और पुराण को जानना पड़ता है इसके लिए श्री राम कथा और श्री कृष्ण कथा का श्रवण परम आवश्यक है।

गोरखनाथ मंदिर स्थित यज्ञ में आज प्रातः आवाहित देवी देवताओं का षोडशोपचार पूजन हुआ । ब्रह्म, विष्णु , महेश, इंद्र , सूर्य वरुण आदि षोडस स्तंभों का पूजन। ऋग्वेद द्वार, यजुर्वेद द्वार, सामवेद द्वार तथा अथर्ववेद द्वार का पूजन,

वैदिक ब्राह्मण पूजन हुआ। इसके उपरांत नैऋत्य कोण पर वास्तु देवी,वायव्य कोण पर क्षेत्रपाल, ईशान कोण पर प्रधान वेदी एवम् ध्वज तथा आग्नेय कोण पर चौषठ योगिनियों का पूजन वैदिक मंत्रों के बीच हुआ । पूज्य योगी आदित्य नाथ जी महाराज ने यज्ञ में आहुति डाली तथा आरती संपन्न हुआ।

प्रातः 18 पुराणों का पाठ एवम् वैदिक मंत्रों का पूजन विद्वान आचार्यगण द्वारा संपन्न हुआ।कथा का समापन आरती और प्रसाद वितरण से हुआ।

कथा में योगी कमलनाथ, योगी शिवनाथ, महन्त रवीन्द्र दास, महन्त सन्तोषदास सतुआबाबा, महन्त मिथिलेश नाथ आदि संत, यजमानगण उपस्थिति रहे ।